जीवन में कभी किसी को कसूरवार न बनाएं, अच्छे लोग खुशियां लाते है, बुरे लोग तर्जुबा।
– अज्ञात

बादशाहत की चमक

आज देश के पास एक से एक शानदार तेज गेंदबाज हैं जो हर कंडीशन में एक लय में गेंदबाजी कर सकते हैं और जरूरत के मुताबिक अपनी शैली बदल भी सकते हैं। विराट कोहली की कप्तानी की चमक थोड़ी और बढ़ी है।

पूजा त्रिवेद्वी

टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में 3–0 से जीत हासिल कर देशवासियों को दीवाली को तोहफा दिया और दुनिया के टेस्ट क्रिकेट परिदृश्य में अपना मुकाम थोड़ा और ऊंचा कर लिया। मंगलवार को रांची टेस्ट के चौथे दिन भारत ने साउथ अफ्रीका को पारी और 202 रनों से हरा दिया। साउथ अफ्रीका के खिलाफ यह भारत की सबसे बड़ी जीत है। इस शानदार जीत के साथ ही भारत ने घरेलू सरजमीं पर लगातार सबसे ज्यादा टेस्ट सीरीज जीतने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। भारतीय टीम ने एमएस धोनी, अजिंक्य रहाणे और विराट कोहली की कप्तानी में अब तक घरेलू सरजमीं पर कुल 11 सीरीज जीती हैं। इस क्रम में उसने ऑस्ट्रेलिया को पीछे छोड़ दिया है, जिसने दो बार 10–10 टेस्ट सीरीज लगातार अपने देश में जीती हैं।

भारत ने इस श्रृंखला का पहला टेस्ट 203 रन से और दूसरा पारी और 137 रन से जीता था। तीनों मैचों में साउथ अफ्रीकी टीम एकदम बेदम नजर आई। भारतीय खिलाड़ी खेल के हर विभाग में हावी रहे। सीरीज विजय में सबसे उल्लेखनीय भूमिका भारत के पेस अटैक की रही। अब तक भारतीय माहौल में स्पिनर्स को ही भारत की असली ताकत माना जाता था। हर मेहमान टीम नेट पर स्पिन प्रैक्टिस ही ज्यादा करती थी, क्योंकि यह मानकर चलती थी कि फिरकी के जाल से बचना ही उसके सामने मुख्य चुनौती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में भारतीय पेसर्स की नई खेप ने दुनिया को चकित कर दिया है। आज देश के पास एक से एक शानदार तेज गेंदबाज हैं जो हर कंडीशन में एक

लय में गेंदबाजी कर सकते हैं और जरूरत के मुताबिक अपनी शैली बदल भी सकते हैं। दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज जुबैर हमजा ने स्वीकार किया कि वे स्पिनरों के खिलाफ रणनीति बनाकर आए थे, पर उन्हें तेज गेंदबाजों से कड़ी चुनौती मिली। पिछले दिनों वेस्टइंडीज के पूर्व बल्लेबाज ब्रायन लारा ने टीम इंडिया के पेस अटैक की जमकर तारीफ की और कहा कि इसको देखकर उन्हें 80 के दशक का कैरीबियाई तेज गेंदबाजी आक्रमण याद आ जाता है। सबसे बड़ी बात यह रही कि इस टीम में ईशांत शर्मा को छोड़कर बाकी पेसर ज्यादा अनुभवी नहीं थे, फिर भी उन्होंने जबर्दस्त धार दिखाई। बल्लेबाजी में भी हर स्तर पर मजबूती दिखी।

इस सीरीज से सलामी बल्लेबाज की भूमिका शुरू करने वाले रोहित शर्मा ने तीन टेस्ट में 529 रन जोड़े। मयंक अग्रवाल ने भी एक दोहरा शतक और एक शतक जड़ा जिससे साफ है कि भारत को एक ताकतवर और भरोसेमंद सलामी जोड़ी मिल गई है। मिडल ऑर्डर में चेतेश्वर पुजारा, विराट कोहली और अजिंक्य रहाणे की तिकड़ी मजबूत है। अच्छे स्पिनर्स का जुड़ना लगातार जारी है। शाहबाज नदीम ने अपने पहले ही टेस्ट में सबका ध्यान खींचा है। विराट कोहली की कप्तानी की चमक थोड़ी और बढ़ी है। खिलाड़ियों को एकजुट रखने और नई चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार करने में फिलहाल वे दुनिया के सभी कप्तानों में अव्वल हैं।

खुश रहने की कला

धर्म-दर्शन

दलाई लामा

पिछले कई वर्षों से खुश रहने से जुड़े अध्ययन किए जाते रहे हैं, जिनके अनुसार खुशहाल जीवन के हजारों फायदों को निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे लोग जो आगामी जीवन के हर क्षेत्र में केवल सफलता की ही कामना करते हैं उनके लिए तो खुश रहना एक मौलिक आवश्यकता है।

अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो लोग खुश रहते हैं उनके दोस्तों की संख्या तो ज्यादा होती ही है, उनका सामाजिक दायरा भी बड़ा होता है। लोग उनसे संतुष्ट रहते हैं और उनका विवाहित जीवन भी खुशहाल होता है। इन सबके अलावा वह अच्छे अभिभावक भी साबित होते हैं।

वे ज्यादा स्वस्थ भी होते हैं और उनके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है। ऐसे भी कई प्रमाण मौजूद हैं जिनके अनुसार खुश रहने वाले लोग 10 साल ज्यादा जीते हैं।

संपादकीय

मरुस्थलीकरण रोकने की मुहिम

भारत ने 2030 तक 2.1 करोड़ हेक्टेयर बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने के अपने लक्ष्य को बढ़ाकर 2.6 करोड़ हेक्टेयर करने का फैसला किया है। इसकी घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में आयोजित यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन टु कॉम्बैट डिजर्टिफिकेशन (यूएनसीसीडी) के 14वें सम्मेलन को संबोधित करते हुए की। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और भूमि क्षरण जैसे मुद्दों पर भारत के सहयोग का भरोसा दिलाया और कहा कि सरकार ने ठान लिया है कि भारत में सिंगल यूज प्लास्टिक के लिए कोई जगह नहीं होगी। उन्होंने जानकारी दी कि 2015 और 2017 के बीच भारत में पेड़ों और जंगल के दायरे में आठ लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी हुई है।

पर्यावरण की रक्षा को लेकर प्रधानमंत्री का संकल्प एक शुभ संकेत है। उम्मीद करें कि सरकार की नीतियों में यह और भी प्रखर रूप में झलकेगा। उपजाऊ जमीनों का मरुस्थल में बदलना निश्चय ही पूरी दुनिया के लिए भारी चिंता का विषय है। इसे अब एक धीमी प्राकृतिक आपदा के रूप में देखा जाने लगा है। संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन संबंधी अंतर–सरकारी समिति (आईपीसीसी) ने पिछले महीने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि विश्व में 23 फीसदी कृषियोग्य भूमि का क्षरण हो चुका है, जबकि भारत में यह हाल 30 फीसदी भूमि का हुआ है। इस आपदा से निपटने के लिए कार्बन उत्सर्जन को रोकना ही काफी नहीं है। इसके लिए खेती में बदलाव करने होंगे, शाकाहार को बढ़ावा देना होगा और जमीन का इस्तेमाल सोच–समझकर करना होगा। लेकिन इस दिशा में एक कदम भी आगे बढ़ाने के लिए हमें विकास प्रक्रिया पर ठहरकर सोचने के लिए तैयार होना होगा। बात तभी बनेगी जब सरकार के साथ–साथ समाज भी अपना नजरिया बदले।

भारत और अफगानिस्तान समेत इस क्षेत्र के कई देशों का शुरू से मानना रहा है कि तालिबान के साथ बातचीत करना उचित नहीं है।

विफलता के बाद

नंदन गर्ग

अमेरिका, तालिबान और अफगान हुकूमत के बीच संभावित बातचीत के अचानक रद्द होने से अमेरिका या पाकिस्तान को भले ही नुकसान हुआ हो, लेकिन इसमें अफगानिस्तान का कोई नुकसान नहीं है और भारत को भी इससे कुछ राहत मिली है। काबुल में गुरुवार को हुए एक तालिबानी हमले के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने वार्ता रद्द करने का फैसला किया। इस हमले में एक अमेरिकी सैनिक समेत 12 लोग मारे गए थे। बातचीत के सिलसिले में एक त्रिपक्षीय गुप्त बैठक बीते रविवार को कैंप डेविड स्थित अमेरिकी राष्ट्रपति के आवास पर होने वाली थी, जो नहीं हुई।

वार्ता रद्द करने को लेकर राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने साफ कहा कि तालिबान ने गलती कर दी, हम अफगानिस्तान से निकलना चाहते थे, लेकिन अब उचित समय पर ही जाएंगे। भारत और अफगानिस्तान समेत इस क्षेत्र के कई देशों का शुरू से मानना रहा है कि तालिबान के साथ बातचीत करना उचित नहीं है। भारत की आशंका यह है कि पाकिस्तान, तालिबान और अमेरिका के बीच आपसी समझदारी से इस क्षेत्र में फिर अशांति आ सकती है। यह भी संभव है कि

अमेरिका के अफगानिस्तान छोड़ते ही एक बार फिर गृहयुद्ध भड़क जाए और पाकिस्तान अपने जिहादियों को पूरी तरह कश्मीर में केंद्रित कर दे। अफगान सरकार ने भी कहा था कि यह समझौता जल्दबाजी में हो रहा है।

राष्ट्रपति अशरफ गनी के अनुसार बेगुनाह लोगों की हत्या करने वाले समूह से शांति समझौता करना निरर्थक है। अमेरिका और तालिबान के बीच अगर शांति वार्ता सफल होती तो इससे अफगानिस्तान की मौजूदा सरकार की हैसियत नाम की ही रह जाती। अमेरिका वहां तैनात अपने सैनिकों को वापस बुला लेता जिससे तालिबान की जड़ें और मजबूत होतीं। अमेरिका के अलावा वहां तालिबान को रोकने वाली कोई ताकत मौजूद नहीं है। दूसरी तरफ पाकिस्तान उन्हें हर तरह की मदद देने को तैयार बैठा है। अगर वहां तालिबान की ताकत मजबूत होती तो इससे भारतीय परियोजनाओं को बहुत नुकसान होता।

अफगानिस्तान में भारत अरबों डॉलर की लागत वाले कई मेगा प्रॉजेक्ट्स पूरे कर चुका है और कुछ पर अभी काम चल रहा है। भारत ने ईरान के चाबहार पोर्ट के विकास में भारी निवेश किया है। यदि अफगानिस्तान में तालिबान सत्तासीन होता है तो हमारी यह परियोजना भी खतरे में पड़ सकती है क्योंकि इससे अफगानिस्तान के रास्ते अन्य देशों में हमारी पहुंच बाधित होगी। इसी 28 सितंबर को अफगानिस्तान में राष्ट्रपति का चुनाव होना है जो निश्चय ही बेहद चुनौतीपूर्ण होगा।

जाहिर है, बातचीत रद्द होने के बाद वहां मौजूद अमेरिकी और नाटो सेना को बेहद सतर्क रहना होगा क्योंकि तालिबान ने वार्ता के टूटने के बाद अमेरिका को धमकी दी है कि वह अब ज्यादा से ज्यादा अमेरिकियों को अपना निशाना बनाएगा। भारत को भी बहुत चौकन्ना रहने की जरूरत है।

सूडोकु नवताल- 5149

सरल

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5148 का हल

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

विकल्प और मजबूरी के मुहाने पर खड़े नीतीश कुमार

नरेंद्र नाथ। बीजेपी जेडीयू गठबंधनबीजेपी अध्यक्ष अमित शाह ने बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव से ठीक एक साल पहले बड़ा बयान देते हुए सार्वजनिक तौर पर नीतीश कुमार को एनडीए गठबंधन का चेहरा बता दिया। इस बयान के पीछे अमित शाह का मकसद उस बयानबाजी और सियासी उठापटक पर अभी विराम लगाना था जो आम चुनाव के बाद से ही बिहार में बीजेपी और जेडीयू के बीच जारी है। महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा के बीच उन्होंने इस विवाद को शांत कर दिया। लेकिन अमित शाह के इस बयान के कई दूसरे राजनीतिक मायने भी हैं। उनका यह बयान बिहार की राजनीति की जटिलता, उसकी सीमा और मजबूरी को भी दिखाता है। इसमें बीजेपी की लॉन्ग टर्म प्लानिंग का भी आभास मिलता है। जानकारों के अनुसार यह बयान उतना सहज भी नहीं है जितना लग रहा है और अमित शाह के बयान के बाद अब गोल पोस्ट शिफ्ट होगा। अमित शाह सियासी गणित के मास्टर माने जाते हैं। जाहिर है कि नीतीश को बिहार में एनडीए का नेता मानने के पीछे उनका पूरा सियासी गुणा–भाग है।